BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

# प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था की अवधारणा : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. कुलराज व्यास
सहायक आचार्य
शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान,
(मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर।

**शोध आलेख सार** – भारत में वर्ण व्यवस्था की शुरूआत वैदिक युग से मानी जाती है। ऋग्वेद से पता चलता है कि जिस समय आर्य सप्तसिंधु में रहते थे तो उन्हें अनार्यों से युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में आर्यों की जीत हुई। आर्यों ने अनार्यों को दास बनाया तथा अपने समाज का भी हिस्सा बनाया। इस तरह आर्य व अनार्यों में वर्ण भेद शुरू हो गया। इस वर्ण व्यवस्था में उन्होंने अनार्यों को भी स्थान दिया। ऋग्वेद में चार वर्णों का उल्लेख है। ये चारों वर्ण आदि पुरूश के क्रमशः मुख, भुजा, उदर व पैर से सम्बन्धित है। पुरूश शुक्त में भी चारों वर्णों का उल्लेख है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था कि अवधारणा का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया।

**मूलशब्द** – प्राचीन भारत, वैदिक युग, आर्य, अनार्य, ऋग्वेद, पुरूश सूक्त, वर्ण व्यवस्था।

**भूमिका** – प्राचीनकाल में भारत में वर्ण व्यवस्था को उपयोगी माना जाता था। और राजा इस व्यवस्था के संचालन के लिए उत्तरदायी था। उसके द्वारा सभी वर्णों को अपने–अपने कर्त्तव्य करने की प्रेरणा दी जाती थी। वैदिक काल से महाभारत काल तक वर्ण व्यवस्था अपने पूर्ण रूप में लागू थी। पुरूश सुक्त के अध्ययन से पता चलता है कि शूद्र भी किसी अन्य जाती के नहीं थे। चारों वर्ण आर्य थे। किसी एक के बिना बाकी तीनों वर्ण अधूरे माने जाते थे। यद्यपि शूद्रों को अध्ययन अध्यापन का कार्य नहीं दिया जाता था। फिर भी उनमें से कुछ मन्त्र दृश्टा ऋशि भी थे। ऐतरेय ब्राह्मण व कौशेतकी ब्राह्मण में कवश ऐलूश का वर्णन प्राप्त होता है जो कि एक मन्त्र दृश्टा ऋशि थे।

**चतुर्वर्ण उत्पत्ति** – चारों वर्णों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में महाभारत में कई जगह उल्लेख आता है जिसके अनुसार एक स्थान पर रंग भेद से वर्ण भेद बताया गया है। इसमें ब्राह्मण का रंग सफेद, क्षत्रियों का लाल, वैष्यों का पीला तथा शुद्रों का काला रंग का जिक्र आता है। पूर्व काल में यह समस्त मनुश्य ब्राह्मण ही थे। जो बाद में विभिन्न कर्मों के कारण चार वर्णों में बंट गये। महाभारत काल में वर्ण व्यवस्था केवल जन्म पर ही आधारित नहीं थी बल्कि जन्म व गुण दोनों पर आधारित थी। इस समय ऐसी मान्यता थी कि ब्रह्मा से उत्पन्न सभी ब्राह्मण है। ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, उदर से वैष्य, तथा पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई। अतः सभी समान है।

**ब्राह्मण वर्ण** – ब्राह्मण काल में ब्राह्मण वर्ण को श्रेश्ठ दर्जा प्राप्त था। और यह दर्जा वैदिक काल से चला आ रहा था। ब्राह्मण को समस्त प्राणियों का गुरू माना जाता था। वैसे तो क्षत्रिय धर्म के अनुसार ब्राह्मण का वध करना पाप की श्रेणी माना जाता था परन्तु युद्ध के लिए तैयार ब्राह्मण का वध करना शास्त्र अनुकूल था। ब्राह्मण का मुख्य कार्य यज्ञ करना, वेद पढ़ना और पढ़ाना तथा दान–दक्षिणा द्वारा जीविका निर्वाह करते हुए सम्पूर्ण मानव जाति पर अनुग्रह करना बताया गया है। ब्राह्मण का मुख्य धर्म इन्द्रिय संयम व स्वाध्याय माना जाता था। इस काल में चारों आश्रमों के पालन की व्यवस्था केवल ब्राह्मण वर्ण के लिए थी। अतः ब्राह्मण हमेशा पवित्र रहते थे। जो ब्राह्मण मांसाहार करता था तथा ऋतुकाल आये बिना पत्नि से समागम करता था, उसे पतित माना जाता था। ऐसी मान्यता थी कि ब्राह्मण धर्म का पालन सबसे बड़ा कर्म है।

**क्षत्रिय वर्ण** – कार्य विभाजन की दृश्टि से ऋग्वेद में क्षत्रिय की उत्पत्ति ब्रह्मा की भुजाओं से बतायी गयी है। सम्मान की दृश्टि से क्षत्रिय समाज में दूसरे स्थान पर था। क्षत्रिय लोगों में यह मान्यता थी कि क्षत्रिय धर्म ही सबसे श्रेश्ठ है। प्रजा पालन तथा


@2025 Bihar Shodh Samaagam

दस्यु दमन क्षत्रियों का धर्म था। क्षत्रिय सम्पूर्ण वर्णों की रक्षा करते थे और उसे कल्याणकारी मानकर इसके पालन के लिए तत्पर रहते थे। यह धर्म अर्थ की प्राप्ति करवाने के साथ–साथ उत्तम नीति का भी ज्ञान करवाता था। राजा का परम कर्त्तव्य था कि वह अपने राज्य के कल्याण के लिए सभी वर्ण के लोगों को धर्म पालन का पाठ पढ़ाये। क्षत्रिय के लिए भिक्षावृति सर्वथा निशेध थी। क्षत्रिय वर्ण स्वभाव से ही कश्ठ सहिश्णु व धीर–वीर होता था। उस समय केवल कुलीन क्षत्रिय ही युद्ध करते थे। जब कर्ण ने रणभूमि में प्रवेश करके अर्जुन से युद्ध करना चाहा तो सूत पुत्र होने के कारण उन्हें रोक दिया गया। जिसे बाद में दुर्योधन ने अंग देश का राजा बनाकर सम्मानित किया। इसके बाद कर्ण राजकुमारों के साथ युद्ध करने का पात्र बन गया। इससे पता चलता है कि महाभारत काल में ऊँच–नीच की भावना क्षत्रिय वर्ण में आ चुकी थी।

**वैष्य वर्ण** – इस वर्ण की उत्पत्ति ब्रह्मा के उदर से बताई गयी है। वर्ण व्यवस्था के क्रम में इसका तीसरा स्थान है। वैष्य का कर्म कृशि, पशुपालन और धर्म अनुसार दान देना है। वैष्य वर्ण का विशेश गुण व्यापार कुशलता माना जाता था। वैष्य को भी ब्राह्मण के प्रथम तीन कर्मों– दान, यज्ञ व अध्ययन का अधिकार था। महाभारत काल में पशुपालन को वैष्यों का प्रमुख कर्म बताया गया है। जो वैष्य इस कार्य को छोड़कर अन्य कार्य करता था उसे अधर्म समझा जाता था। अपने वर्ण धर्म का उचित पालन करके वैष्य प्राढ़ोवस्था में राजा की आज्ञा से वानप्रस्थ आश्रम को ग्रहण कर सकता था। वैष्य का यह कर्त्तव्य था कि वह धर्नोपार्जन का कार्य करे और वैष्य धर्म के अनुसार दान भी दे। वैष्यों के लिए ब्याज लेना, कृशि, पशुपालन और व्यापार महान कर्म माने जाते थे।

**शूद्र वर्ण –** ऋग्वेद में केवल तीन वर्णों का ही उल्लेख है परन्तु पुरूश सुक्त में चौथे वर्ण के रूप में शूद्र का उल्लेख मिलता है। शुद्र की उत्पत्ति ब्रह्मा के पैरों से मानी गयी है। ऐसी मान्यता उस समय प्रचलित थी कि जैसे गंगा भारतीय समाज की सेवा करने वाली तथा सबको पवित्र करने वाली है। ऐसी ही स्थिति शूद्र वर्ण की थी, परन्तु महाभारत काल में शूद्र वर्ण की स्थिति बदल गयी है। शूद्र वर्ण का व्यक्ति योग्य होने पर भी राजकुमारों के साथ युद्ध नहीं कर सकता था। कर्ण का पालन–पोशण सूत वंश में होने के कारण उसे रणभूमि में युद्ध करने से रोक दिया गया था। राजसूय यज्ञ में भी शुद्रों को वेदी के पास जाने की मनाही थी। उनके लिए वेदों का अध्ययन निशेध था तथा वेद की ऋचाएं भी नहीं सुन सकते थे। उनका कर्त्तव्य केवल तीनों वर्णों की सेवा करना ही था।

चूंकि वैदिक युग में इस वर्ण के साथ समानता का व्यवहार किया जाता था। और धर्म के अलावा उन्हें राजनीति तथा दण्डनीति में अच्छा स्थान प्राप्त था। दण्डनीति के अनुसार ब्राह्मण को वाणी द्वारा दण्डित करने का विधान था परन्तु शूद्र के दण्ड विधान में निर्दण्ड शब्द का प्रयोग किया गया है। शूद्रों को वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश की मनाही थी। केवल विशेश परिस्थितियों में ही उन्हें इस आश्रम में प्रवेश प्राप्त हो सकता था। शूद्रों को उपनयन आदि संस्कारों का भी अधिकार नहीं था और न ही उन्हें वैदिक अग्निहोत्र आदि कर्मों का अधिकार था।

**शोध सारांश –** प्रस्तुत शोध से स्पश्ट होता है कि महाभारत काल आते–आते वर्ण व्यवस्था की स्थिति में परिवर्तन आया और यह स्थिति वैदिक काल की अपेक्षा अधिक भेदभाव पूर्ण रूप में दिखने लगी। ऋग्वेद में चारों वर्णों का उल्लेख केवल पुरूश सूक्त में हुआ है। इसमें ब्राह्मण वर्ग को सबसे उपर रखा गया है। वैदिक युग में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी जो कालान्तर में परिवर्तित होकर जन्म पर आधारित हो गयी।

**संदर्भ सूची –**


1. सतीश चन्द्र काला, सिन्धु सभ्यता, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, 1955
2. शिवदत्त ज्ञानी, वेदकालीन समाज, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1967
3. डी.एन.झा, प्राचीन भारतः एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2005
4. प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत, लगभग 600 ईस्वी तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
5. गजानन माधव मुक्तिबोध, भारतः इतिहास और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
6. रणवीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल– प्राचीनतम पर्व से 600 ईस्वी तक, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली 2012
7. भरतलाल चतुर्वेदी, महाभारतकालीन समाज व्यवस्था, विद्याप्रकाशन, नई दिल्ली, 1981
8. द्विजेन्द्र नारायण झा, प्राचीन भारतः सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की पड़ताल, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2000